पंचम पत्र

प्रश्न → हिन्दी नाट्य साहित्य का संक्षिप्त इतिहास लिखते हुए उनके विकास में जयशंकर प्रसाद का स्थान निर्धारित कीजिए?

या → हिन्दी नाटक के विकास पर एक लेख लिखिए?

उत्तर →

डॉ० दशरथ ओझा हिन्दी नाटक का विकास 13वीं शताब्दी से मानते हैं पर विचार पूर्वक देखने पर हिन्दी नाट्य साहित्य का विकास 19वीं शताब्दी से ही मानना चाहिए। इसमें विकास क्रम को यों दर्शाया जा सकता है—

1. भारतेन्दु के पूर्व नाटक
2. भारतेन्दु युगीन हिन्दी नाटक
3. द्विवेदी युगीन हिन्दी नाटक
4. 'प्रसाद' युगीन हिन्दी नाटक
5. प्रसादोत्तर हिन्दी नाटक

1. **भारतेन्दु के पूर्व नाटक** → भारतेन्दु के पूर्व 17वीं शताब्दी से ही हिन्दी नाटकों की रचना होने लगी थी परन्तु उनमें नाट्य शास्त्र के तत्वों का सर्वथा अभाव है। देवकवि कृत प्रबोध चन्द्रोदय, बनारसीदास चतुर्वेदी लिखित 'समयसार' रीतिकाल में लिखे गये थे पर इनकी रचना नाट्य साहित्य के अन्तर्गत नहीं की जा सकती। भारतेन्दु के पूर्व निवाजकृत "शकुन्तला" हृदयराम कृत "हनुमन्नाटक" प्राणचंद चौहान की "रामायण महानाटक" आदि नाटकों का उल्लेख आवश्यक है पर इनमें भी नाटकीय तत्वों का अभाव है। भारतेन्दु के पूर्व केवल दो ही मौलिक नाटक लिखे गये प्रथम — रीवाँ नरेश विश्वनाथ सिंह का आनन्द रघुनंदन द्वितीय — भारतेन्दु के पिता गोपालचन्द्र कृत "नहुष"। इनमें नाटकीय तत्वों का समुचित समावेश है।

2. **भारतेन्दु युगीन हिन्दी नाटक** → भारतेन्दु को हिन्दी का सर्वप्रथम नाटककार घोषित किया गया है। इन्होंने जहाँ एक ओर जन सामान्य में राष्ट्रीय भावना का उद्घोष किया वहीं दूसरी ओर सामाजिक तथा धार्मिक जागरूकता भी दी। डॉ० प्रजापति चन्द्रगुप्त ने लिखा है — यदि हम एक ऐसा नाटककार ढूंढे जिसने नाट्य शास्त्र के गम्भीर अध्ययन के आधार पर नाट्य कला पर सैद्धान्तिक आलोचना लिखी है

जिसने प्राचीन तथा नवीन स्वदेशी तथा विदेशी नाटकों का
अध्ययन और अनुवाद किया हो, जिसने वैयक्तिक और
सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्याओं को लेकर अनेक
पौराणिक, ऐतिहासिक एवं मौलिक नाटकों की रचना की हो
और नाटकों की रचना ही नहीं अपितु उन्हें रंगमंच पर
खेलकर दिखाया भी हो - इन सब विशेषताओं से
सम्पन्न नाटककार हिन्दी में ही नहीं समस्त विश्व साहित्य
में केवल दो चार मिलकर और इन सब में भारतेन्दु का
स्थान सबसे ऊँचा होगा।"

भारतेन्दु अपने समय से पूर्व की सभी
नाट्य परम्पराओं को अपनाया तथा युगानुरूप उनमें
संशोधन भी किया उन्होंने कुछ संस्कृत तथा बंगला के
नाटकों का अनुवाद भी किया तथा अनेक मौलिक नाटकों की
रचना भी की। नाटकों की कथावस्तु जीवन के विविध क्षेत्रों से
ली। किसी नाटक में एकांतिक प्रेम का चित्रण किया गया है तो
किसी में सामयिक सामाजिक तथा धार्मिक समस्याओं का
चित्रण कहीं ऐतिहासिक एवं पौराणिक वृत्त के आधार पर
नाटक का ढाँचा खड़ा किया गया है तो कहीं देश की
दुर्दशा का मार्मिक चित्र उपस्थित किया गया है। भारतेन्दु
के पूर्व के नाटकों के सीमित विषय की दीवार टूट गयी
और विषय भूमि को पूरा विस्तार मिला।

इनमें 'नील देवी' और 'सती प्रताप'
में इतिहास और पुराण की उज्ज्वल गाथाएँ हैं जिनमें
आलोक में विपथगामिनी आर्य ~~[illegible]~~ महिलाएँ अपना
मार्ग पहचान सकती हैं।

भारतेन्दु के उपर्युक्त प्रवृत्तियों के आधार
पर लाला श्रीनिवास दास ने प्रह्लाद चरित, तप्ता संवरण,
रणधीर प्रेम मोहिनी तथा संयोगिता स्वयंवर नामक नाटक
लिखे। प्रतापनारायण मिश्र ने कलि कौतुक, कलि प्रभाव, जुआरी
खुआरी और हठी हम्मीर नामक नाटकों की रचना की।
इस युग के नाटककारों में राधाकृष्ण दास बालकृष्ण
भट्ट तथा राधाचरण गोस्वामी का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

भारतेन्दु युग में सामाजिक
राजनीतिक राष्ट्रीय भावना पूर्ण नाटक तथा व्यंग्य एवं
विनोद से परिपूर्ण प्रहसन लिखे गये। सामाजिक नाटकों
में कुरीतियों पर विचार किया गया। भारतेन्दु का प्रेम योगिनी
राधाकृष्ण दास का 'दु:खिनी बाला' प्रताप नारायण मिश्र क

~~औ~~ से 'गोसंकर' प्रमुख है।

भारतेन्दु युग में दैवी तथा पौराणिक पात्रों में कमी की गयी है उनके स्थान पर मानव पात्रों का सर्जन किया गया है। नाटक की समबद्ध यथार्थ जीवन से दिखाया गया है पद के स्थान पर गद्य और ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली की प्रतिष्ठा की गयी है। संस्कृत की नाट्य शैली भरत वाक्य नान्दी पाठ स्वगत कथन तथा काव्य रमक चमत्कार का विशेष अनुकरण किया गया है।

3. द्विवेदी युगीन हिन्दी नाटक →

औद्योगिक युग ने इस युग के नाटकों को अधिक प्रभावित किया। सात्विकता तथा आदर्शवादिता का रंग देखा गया। द्विवेदी जी ने वस्तु शैली और भाषा में परिष्कार किये। इस युग में नाटकों की उन्नति नहीं हुई। मौलिक नाटककारों में बदरीनाथ भट्ट, देवी प्रसाद गोस्वामी, लाल चतुर्वेदी आदि हैं। ऐतिहासिक नाटकों की भी रचना हुई। जगन्नाथ चतुर्वेदी का 'तुलसीदास' वियोगी हरि का 'प्रबुद्ध यामुन' मिश्रबंधुओं का 'भिखारी' माखन लाल चतुर्वेदी का 'कृष्णार्जुन युद्ध' आदि प्रसिद्ध हैं। पद ~~की~~ भाषा खड़ी बोली तथा पद्य की प्रधानता घटने लगी। तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ।

4. प्रसाद युगीन हिन्दी नाटक →

प्रसाद जी ने हिन्दी नाटकों को अपनी मौलिकता प्रदान की। भारतेन्दु के बाद प्रसाद जी ने आगे का मार्ग प्रशस्त किया। नूतन नाट्य शैली द्वारा हिन्दी नाटकों का श्रृंगार ही नहीं किया बल्कि पात्रों को भी स्वतंत्र अस्तित्व प्रदान किया। नाट्य शिल्प में नवीनता का समावेश किया।

प्रसाद जी एक मौलिक व्यक्तित्व लेकर आये। प्राचीन पद्धति के नान्दी पाठ, मंगलाचरण, प्रस्तावना आदि की प्रसाद जी ने पूर्ण उपेक्षा की। विदूषक पात्रों के स्थान पर हँसोड़ पात्रों की नियोजना की। पात्रों में स्वतंत्र व्यक्तित्व एवं शील वैचित्र्य का समावेश किया। नाटकों में रस योजना की महत्ता दी। प्रतिनिषिद्ध दृश्यों के नियमों में परिवर्तन किया। अभिनय की सोच रखी। वातावरण हेतु गीतों की योजना की। इन्होंने पंच संधियाँ, अर्थ प्रकृतियाँ तथा कार्यावस्थाओं का नियोजन किया। नाटकों अन्तर्द्वन्द्व का कलात्मक चित्रण उपस्थित किया। अतीत से लगाव तथा ऐतिहासिकता में वर्तमान समस्याओं का समाधान करते हैं। वे अपने नाटकों में सुखान्त दुखान्त से परे प्रसादान्त प्रतीत होते हैं।

प्रसाद जी के नाटक विविध विषयात्मक हैं। इनमें प्रथम श्रेणी नाटकों में ऐतिहासिक नाटकों का स्थान आता है। जैसे कल्याणी परिणय, प्रायश्चित, 'राज्यश्री' विशाख, 'अजातशत्रु' 'स्कन्दगुप्त' 'चन्द्रगुप्त' तथा ध्रुवस्वामिनी है। इनको मौलिकता के दर्शन होते हैं। भारतीय संस्कृति का अन्वेषण किया गया है। राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत किया गया है। दूसरी श्रेणी में सज्जन तथा "जनमेजय का नागयज्ञ" पौराणिक नाटक हैं। ध्रुवस्वामिनी में माध्यम से नारी अधिकारों की माँग की गयी है। इनकी प्रतीकात्मक नाटक 'कामना' और "एक घूँट" है। पाँचवी श्रेणी में नाटक में गीतिनाट्य शैली पर रचित 'करुणालय' है।

प्रसाद के नाटक अभिनेय नहीं हैं भाषा क्लिष्ट, लम्बे सम्वाद, रहस्यमयी उक्तियाँ, युद्ध सेना आत्म हत्या तथा अनावश्यक पात्रों की भीड़ अस्वाभाविकता के कारण है। इसी कारण इनके नाटक अभिनेय नहीं हैं।

5. प्रसादोत्तर हिन्दी नाट्य साहित्य → प्रसादोत्तर काल के नाटकों में सर्वप्रथम श्री गोविन्द वल्लभ पंत का नाम आता है। पंत जी आपने नाटकों की रचना प्रसाद जी की भावभूमि पर की। इनके नाटकों में इतिहास और कल्पना का अद्भुत समन्वय है। समाज समस्याओं को रखने की चेष्टा की है। पात्रों के चरित्र चित्रण में अधिक सफल हुए हैं। अभिनेयता की प्रधानता है। इनके नाटकों में "कंजूस की खोपड़ी" वरमाला, राजमुकुट, अंगूर की बेटी, अंतःपुर का छिद्र, सिन्दूर बिन्दु आदि उल्लेख्य। प्रेमी → पंत के बाद प्रेमी जी का स्थान आता है। नाटक लेखक में इन्हें प्रसाद जी से कम सफलता नहीं मिली ये भी ऐतिहासिक नाटककार हैं ऐतिहासिक सामग्री का उपयोग मुगल काल से हुआ है। इनमें लिखे नाटक - स्वर्ण विहान, पाताल विजय, रक्षा बंधन, शिवसाधना, प्रतिशोध आहुति, स्वप्नभंग, छाया उद्धार, उभिन्न विषपान।

लक्ष्मीनारायण मिश्र → प्रेमी के बाद मिश्र यशस्वी नाटककार हैं। इन पर इब्सन और शॉ का प्रभाव है उन्होंने समस्या प्रधान नाटकों की भी सृष्टि की है। मिश्रजी बौद्धिकता को स्वीकार किया है भावुकता को निर्बल बताया है। नारी समस्या और काम समस्या इनके नाटक का केन्द्र है। इनमें नाटक हैं - समाज के विद्रोह, 'संन्यासी' राक्षस, सिन्दूर की होली, आधी रात, अशोक गरुड़ध्वज, नारद की वीणा, गुड़िया का घर, वत्सराज, दशाश्वमेध वितस्ता की लहरें विशेष प्रसिद्ध हैं।

उदयशंकर भट्ट → ये पौराणिक नाटकों की रचना किये हैं भावनाट्य तथा गीतिनाट्य लिखकर अधिक सफल हुए हैं। इनका धार्मिक संघर्ष का निरूपण उच्चकोटि की है। इनके नाटक हैं - अम्बा, सागर विजय, विक्रमादित्य, राधा, मत्स्यगंधा, विश्वामित्र, कालिदास और मेघदूत।

सेठ गोविन्द दास - ये ऐतिहासिक तथा सामाजिक नाटककार हैं ऐतिहासिक नाटकों में 'हर्ष' तथा कर्त्तव्य विशेष प्रसिद्ध हैं इनमें सामाजिक नाटकों में समस्याओं का निरूपण अपूर्व कौशल के साथ किया गया है। इनमें नाटक दुःख क्यों, प्रकाश...